पाठ 1

विश्व में क्या हो रहा है?

इस पाठ में आप पढ़ेंगे

- आप सत्य कैसे जान सकते हैं?
- विश्व का आरम्भ कैसे हुआ?
- विश्व में क्या दुर्घटना हुई?
- विश्व के लिए क्या कोई आशा है?

भाग 1

आप सत्य कैसे जान सकते हैं?

विज्ञान, इतिहास और निरीक्षण

विज्ञान, इतिहास और निरीक्षण से मनुष्य जाति और विश्व के विषय में बहुत ही रोचक ज्ञान पा सकते हैं। तो भी जीवन के महान प्रश्नों के उत्तर इन विषयों में आप नहीं पा सकते। जीवन का आरम्भ कैसे हुआ, जीवन का उद्देश्य क्या है, और भविष्य क्या है—ये विषय नहीं बता सकते हैं।

बाइबल

विश्व को जिसने सृजा वह बता सकता है क्यों और कैसे रचा। परमेश्वर अपनी पवित्र पुस्तक बाइबल में इन सबके विषय बताता है। विश्व में मानव जाति के लिए यह शिक्षा की पुस्तक है।

ये पाठ बाइबल पर आधारित हैं। इन पाठों में बाइबल के अनगिनत पदों में से कुछ प्रयोग किये गये हैं। जिनमें आपके प्रश्नों के उत्तर हैं। उद्धरण से पहले हवाला दिया गया है। बाइबल में अमुक शब्द कहां है, इसके लिए पुस्तक का नाम , अध्याय और पद भी दिये गये हैं।

बाइबल के विभिन्न अनुवाद इसकी मूल भाषा से किये गये हैं। जो बाइबल आपके पास है सम्भव है उसके और इन शब्दों में कुछ अन्तर हो। ये शब्द हिन्दी और इंग्लिश अनुवाद से लिये गये हैं।

भाग 2

विश्व का आरम्भ कैसे हुआ?

क्या अचानक ही बन गया?

क्या आपने अपने मन से प्रश्न किया कि "यह विश्व कहाँ से आया? क्या अचानक ही बन गया? या महान ज्ञान ने योजना बनायी और महान शक्ति ने इसकी सृष्टि की।"

जब आप साइकिल, कार या वायुयान देखते हैं, आप जानते हैं ये वस्तुएँ अपने आप नहीं बनीं। किसी ने योजना रची और बनाया। ताकि अपने निर्धारित नियमों पर चलती रहें।

विश्व की रचना एक योजना पर बनी।

विश्व और उसकी हर वस्तु एक निर्धारित नमूने पर चलती है। जिसे हम प्रकृति का नियम कहते हैं। विज्ञान जितनी ही खोज इन नियमों की करता है, उतना ही स्पष्ट ज्ञात होता जाता है कि विस्तृत योजना बनाकर विश्व सृजा गया। अपनी योजना ही पर उसका संचालन करता है। यही सर्वशक्तिमान सर्वज्ञानी सृजनहार परमेश्वर है। वह प्रभु है जो विश्व पर राज्य करता है।

याद कीजिये

उत्पत्ति 1:1 "आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।"

यूहन्ना 1:3 सब कुछ उसी के द्वारा सृजा गया।

परमेश्वर ने सिद्ध विश्व रचा

परमेश्वर ने सूर्य, चन्द्रमा, तारागण और पृथ्वी सृजी। उसने उनके गृहपथ ठहराये ताकि एक दूसरे से न टकरा जाएँ। उसने सूर्य और पृथ्वी के बीच सही दूरी ठहरायी—न तो अधिक पास, वरना सब वस्तुएँ जल जाएँगी : न बहुत दूर, वरना हम हिम हो जाएँगे। समुद्र और भूमि के बराबर भाग थे: बिल्कुल सही वायुमण्डल था। तब परमेश्वर ने जीव जन्तुओं की सृष्टि की। अन्त में मनुष्य को बनाया और इस मनभावने और सुन्दर विश्व में रखा।

याद कीजिये

उत्पत्ति 1:31 "तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, देखा कि वह बहुत ही अच्छा है।"

क्यों परमेश्वर ने विश्व सृजा

परमेश्वर ने अपने आनंद के लिए विश्व सृजा। मनुष्य का कुटुम्ब सृजा, ताकि वे उसकी सन्तान हों, उनसे प्रेम करे और आनन्दित हो। भूमि उनके निवास के लिए बनायी। अपने सृजे विश्व के उत्तम संचालन और सुन्दरता से परमेश्वर को आनन्द हुआ; पर अपनी सन्तान का प्रेम पाने से उसे अधिक प्रसन्नता होती है।

प्रकाशितवाक्य 4:11 "क्योंकि तू ही ने सब वस्तुएँ सृजीं और वे तेरी ही इच्छा से थीं, और सृजी गईं।

भजनसंहिता 149:4 "यहोवा अपनी प्रजा से प्रसन्न रहता है।"

परमेश्वर की इच्छा थी कि उसकी सन्तान उसी के समान हो और उसका काम करे। इसलिए पहले पुरुष और स्त्री, आदम और हव्वा को ऐसा स्वभाव दिया जो उससे मिलता-जुलता था। परमेश्वर उन्हें सिखायेगा ताकि उसकी सहायता से इस पृथ्वी पर राज्य करेंगे।

उत्पत्ति 1:26 "फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ...और सारी पृथ्वी पर अधिकार रखें।"

प्रश्नों के उत्तर लिखें

- खाली स्थान भरें।
- कौन सी पुस्तक बताती है कि विश्व की सृष्टि क्यों और कैसे हुई?
  .....
- जीवन का नमूना किसने बनया जिसे हम प्रकृति के नियम कहते हैं?
  .....
- किसके आनन्द के लिए विश्व बनाया गया?.....
- विश्व अच्छा था या बुरा?.....
- पहले पुरुष और स्त्री का नाम दीजिये..... और.
  .....।
- परमेश्वर चाहता था कि मनुष्य का कुटुम्ब उसके प्रेम का लाभ उठाए और उसकी.....बना रहे।
- .....की सहायता से मुनष्य जाति.....राज्य करे
  .....

भाग 3

विश्व में क्या दुर्घटना हुई?

कुछ अनुचित कार्य।

अपने चारों ओर दृष्टि डालिए, पीड़ा, शोक, विरोध, युद्ध, भुखमरी और मृत्यु पायेंगे। विश्व अब पवित्र नहीं रहा। कौन-सा अनुचित कार्य हुआ? यह पवित्र विश्व, परमेश्वर के शत्रु और खुद मनुष्य द्वारा बिगाड़ दिया गया।

परमेश्वर का शत्रु

शैतान या दुष्ट परमेश्वर का शक्तिशाली शत्रु है। परमेश्वर जो भी करता है शैतान उसका विरोधी है। परमेश्वर भला है। शैतान बुराई द्वारा भलाई से लड़ता है। परमेश्वर हमारी सहायता करता है : शैतान हमको नाश करना चाहता है। परमेश्वर मनुष्य का प्रेम और संगति चाहता है। दुष्ट परमेश्वर से अलग करता है। शैतान कोशिश में है, कि परमेश्वर को छोड़, हम उसके पीछे चलें।

मनुष्य का पाप

परमेश्वर के विषय, आदम हव्वा से शैतान झूठ बोला। बहकाकर उसने उनको पाप में गिराया। ताकि आज्ञा को तोड़ें। परमेश्वर ने आदम को चिताया था कि पाप का फल मृत्यु होगी क्योंकि पाप परमेश्वर से मनुष्य को अलग करता है। परमेश्वर जीवन देता है। परमेश्वर से अलग होने का अर्थ मृत्यु है। आदम हव्वा ने परमेश्वर के बदले शैतान पर भरोसा किया। उन्होंने परमेश्वर का नियम तोड़ा, मनमाना कार्य किया, संसार पर इसका दुःखदायी परिणाम पड़ा।

पाप के परिणाम

पाप रोग और मृत्यु विश्व में लाया।

रोमियों 5:12 इसलिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया और पाप के द्वारा मृत्यु आई और इसी रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिए कि सबने पाप किया।

पाप ने परमेश्वर और मनुष्य के बीच की संगति नाश कर दी। मनुष्य विद्रोही, आज्ञा तोड़ने वाला और पापी बन रहेगा तब तक उसकी संगति परमेश्वर से नहीं हो सकती। परमेश्वर की संतान के बदले वह पाप का दास है।

रोमियों 6:16 क्या तुम नहीं जानते कि जिसकी आज्ञा मानने के लिए तुम अपने आपको दासों की नाईं सौंप देते हो उसके दास हो : और जिसकी मानते हो, चाहे पाप के, जिसका अंत मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के, जिसका अंत धार्मिकता है।

परमेश्वर की आज्ञा तोड़ने का चुनाव करके हम शैतान के अधीन हो जाते हैं। परमेश्वर और शैतान के बीच युद्ध के लिए यह पृथ्वी रणक्षेत्र है। आप चुनिए आपको किस ओर होना चाहिए।

आपका चुनाव–परमेश्वर का मार्ग या शैतान का मार्ग

यहोशू 24:15 "आज चुन लो कि तुम किसकी सेवा करोगे.....मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा नित करूँगा।"

परमेश्वर का दान	शैतान का दान
प्रकृति में	
पवित्र सृष्टि, व्यवस्था	प्रकृति का सर्वनाश, अव्यवस्था
स्थिरता, सुन्दरता	बरबादी, बेडौल, निर्धनता,
बहुतायत से पूर्ति।	भुखमरी-बीमारियाँ

हमारी देह में

स्वास्थ्य, भूख, जीवन और	पेटूपन, दोष, लालच
स्वास्थ्य।	बीमारियाँ, और मृत्यु।

हमारे विचार भावना और कार्य में

सत्य, विश्वास, बुद्धि	गलती, अविश्वास, अज्ञानता
अच्छे विचार	बुरे विचार
उद्देश्य, रचना	उद्देश्य रहित, विनाश
सिद्ध प्रेम	स्वार्थ, घृणा
विश्वास भरोसा	भय, सन्देह
नम्रता, आज्ञाकारी	घमण्ड, विद्रोह
चुनाव की स्वतंत्रता	पाप का दासत्व
शान्ति, खुशी, आनन्द	झगड़े, युद्ध, निराशा
सहायता की भावना, न्याय	अपराध, अन्याय
परमेश्वर के साथ संगति।	परमेश्वर से दूरी।

आपका काम

- इस चार्ट में आपको जो बातें पसंद हों उनके सामने X चिन्ह लगायें जो बातें पसंद न हों उनके समाने O चिन्ह लगायें। आपके चिन्हों के अनुसार आप किस ओर हैं, परमेश्वर या शैतान.....?

भाग 4

विश्व के लिए क्या कोई आशा है?

परमेश्वर ने विश्व को नहीं त्यागा

हम पापी हैं तो भी परमेश्वर प्रेम करता है। पाप शैतान और अनंत मृत्यु से बचाने का उसने उपाय

किया है। परमेश्वर विश्व पर राज्य करता है। सारी पृथ्वी पर फिर उसकी आज्ञा मानी जाएगी।

परमेश्वर के पुत्र ने हमारा दण्ड सहा

पृथ्वी पर हर व्यक्ति ने पाप किया है। मृत्यु की सजा हो चुकी है। हमारे पास अपने बचाव का कोई उपाय न था। परमेश्वर ने इतना प्रेम किया कि अपने पुत्र प्रभु यीशु मसीह को भेजा, ताकि हमारा दण्ड भोगे।

लगभग 2000 वर्ष पहले प्रभु यीशु परमेश्वर की सामर्थ से एक कुंवारी द्वारा फिलिस्तीन देश में पैदा हुए। परमेश्वर के प्रेम और सत्य की शिक्षा दी। पूरे जीवन भर कोई अनुचित कार्य नहीं किया। तो भी कीलों से क्रूस पर टांगे गये और अपराधियों के समान मृत्यु दण्ड सहा। हमारे पापों के कारण हमारे बदले में मरा।

परमेश्वर ने जगत के सामने प्रमाण रखा कि प्रभु यीशु उनके पुत्र थे। उन्होंने उसे तीसरे दिन मृतकों में से जिलाया। चालीस दिन बाद यीशु देहसहित स्वर्ग चले गए।

जी उठने के बाद जिन मित्रों ने यीशु को देखा था, स्वर्ग जाते जिन्होंने देखा था, उन्होंने हमें सुसमाचार में यह संदेश दिया है।

यीशु को ग्रहण करने से हम परमेश्वर की सन्तान बनते हैं।

यीशु ने हमारा दण्ड सहा। जो उसे मुक्तिदाता मानेंगे। वे शैतान की शक्ति से स्वतंत्र होंगे। जब पाप छोड़ देते हैं परमेश्वर हमें अपनी सन्तान बनाता है। परमेश्वर चाहता है कि हम उसके पुत्र पर **विश्वास**

लाएँ। पाप से बचें। पर हम पर दबाव नहीं डालता।

रोमियो 5:17 "जब एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने राज्य किया.....जो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी **वरदान** बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के अर्थात् प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अनंत जीवन में राज्य करेंगे।

याद कीजिए

यूहन्ना 3:16 क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर **विश्वास** करे वह नाश न हो परन्तु अनंत जीवन पाए।

रोमियों 6:23 पाप की मज़दूरी मृत्यु है परन्तु पमेश्वर का **वरदान** हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनंत जीवन है।

आप सिद्ध विश्व में रह सकते हैं।

यीशु जगत को पाप से एक दिन आकर स्वतंत्र करेंगे। पवित्र बनाएंगे। अभी आप उसे मुक्तिदाता मानेंगे तो बड़े आनंद से उसके साथ निवास कर सकेंगे। यीशु को यदि मुक्तिदाता मानेंगे तो आपका जीवन आनंद से भर जाएगा। आप उत्तम व्यक्ति होंगे। आशीषों का आनंद अभी पाएँगे। अपनी सन्तान को परमेश्वर आनंद देता है।

आपका काम

- खाली स्थान में अपना नाम लिखिए।
- क्योंकि परमेश्वर ने.....से इतना प्यार किया कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया ताकि.....उस पर **विश्वास** करे नाश न हो, परन्तु अनंत जीवन पाए।

- यदि यीशु को आप मुक्तिदाता अभी ग्रहण करना चाहते हैं, तो यह प्रार्थना कीजिए।

प्रार्थना

परमेश्वर, तेरा धन्यवाद हो, तूने मुझसे प्रेम किया और अपने पुत्र को भेजा कि मेरे पापों के लिए मरे। यीशु को मैं अपना मुक्तिदाता ग्रहण करता हूँ। जीवन भर तेरे पीछे चलूँगा, शैतान की ओर न होऊँगा। कृपा कर मुझे वैसा ही व्यक्ति बना जैसा तू चाहता है।